अगस्त 2024 वर्ष 3, अंक 7

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.– मासिक समाचार

"मुझे प्रार्थना खतरों से बचने के लिए नहीं, बल्कि उनका सामना करने में निडर होने के लिए करनी चाहिए। मुझे प्रार्थना अपने दर्द को शांत करने के लिए नहीं, बल्कि दिल से उस पर विजय पाने के लिए करनी चाहिए।"

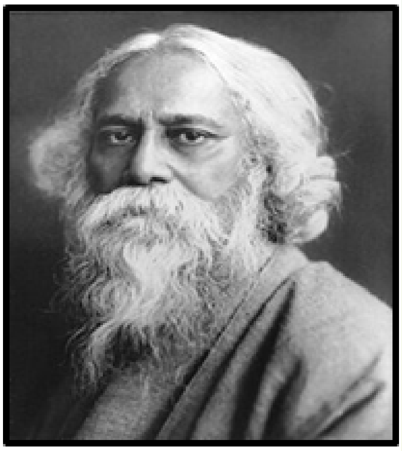

– रबीन्द्रनाथ टैगोर

खण्ड

खंड क : डी.ई.आई. 3

खंड ख : डी.ईआई. – ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा 5

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI) 9

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड कः डी.ई.आई.

1. डी.ई.आई. में 78 वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन 3
2. गर्भाशय ग्रीवा कैंसर और किशोर स्वास्थ्य पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 3
संकाय समाचार
3. कला संकाय 4
शिक्षकोपलब्धि 4
छात्रोपलब्धियाँ 4
4. शिक्षा संकाय 4
शिक्षकोपलब्धि 4

खंड खः डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

5. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 5
6. रहस्यपूर्ण पीनियल ग्रंथि 6
7. सूचना केन्द्रों से समाचार 7
मुरार सेंटर में ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित 7
78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन डी.ई.आई केंद्रों में किया गया 8

खंड गः डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

8. संपादक की डेस्क से 9
9. मेरा विद्यालयः दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थान 9
मोहित सतसंगी
10. स्नातक छात्रों को संत कबीर की कविता पढ़ानाः एक अनूठा अनुभव 10
गुरप्यारी भटनागर
11. परम विजय 11
प्रिया सिंह
प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड 12

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

डी.ई.आई. में 78 वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), दयालबाग़, आगरा–282005 में 78वां स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह और देशभक्तिपूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया। श्रीमती प्रतिभा सिंह आई ए एस, मुख्य विकास अधिकारी, आगरा, दिवस की मुख्य अतिथि थीं और उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। डी.ई.आई.–एन.सी.सी के छात्रों ने अतिथि महोदया को 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया। श्रीमती प्रतिभा सिंह के आगमन पर डी.ई.आई के विभिन्न संकायों, कॉलेजों और स्कूलों की टुकड़ियों द्वारा एक भव्य मार्च पास्ट उल्लेखनीय अनुशासन और समन्वय के साथ आयोजित किया गया। डी.ई.आई के छात्रों के एक समूह द्वारा गाए गए देशभक्ति गीत ने राष्ट्र के प्रति सम्मान और गौरव की भावना को बढ़ावा दिया। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं मार्च पास्ट परेड के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गये। उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 'संत (सु) पर मैन इवोल्यूशनरी स्कीम' की टुकड़ियों को विशेष पुरस्कार दिए गए, जिनमें डी.ई.आई नर्सरी और प्ले सेंटर और दयालबाग के विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों के छात्र शामिल थे। इसके अलावा, मार्च पास्ट के विजेताओं – डी.ई.आई प्रेम विद्यालय, टेक्निकल कॉलेज और डी.ई.आई बैंड की टुकड़ियों को रनिंग शील्ड दी गईं। कार्यक्रम को भारत और विदेशों में डी.ई.आई के विभिन्न अध्ययन केंद्रों पर प्रसारित किया गया और दयालबाग़ के ई–कैस्केड नेटवर्क के माध्यम से हजारों लोगों ने इसमें भाग लिया। मुख्य अतिथि ने डी.ई.आई में आयोजित कार्यक्रम की सराहना की और छात्रों को अपनी कड़ी मेहनत, समर्पण और अनुशासन के माध्यम से भारत के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में योगदान देने के लिए तैयार रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने छात्रों को स्वतंत्रता दिवस का महत्त्व समझाया और भारत के स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए महान बलिदानों को याद किया। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि डी.ई.आई की शिक्षा प्रणाली एक संपूर्ण और समग्र इंसान का निर्माण करती है और सराहना की कि संस्थान अपने छात्रों को देश का जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए वांछित मूल्यों और गुणों को उल्लेखनीय रूप से प्रदान कर रहा है। संस्थान के कार्यवाहक निदेशक प्रोफेसर सी. पटवर्धन ने सभी को स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए छात्रों से जीवन में बड़ी सफलता हासिल करने के लिए समर्पण के साथ कड़ी मेहनत के लिए आगे आने का आग्रह किया। कार्यक्रम का समापन संस्थान गीत के साथ हुआ, जिसके बाद इस अवसर पर आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया। डी.ई.आई में क्रियान्वित विभिन्न नवीन उत्पादों एवं योजनाओं की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसे उपस्थित सभी लोगों ने खूब सराहा। श्रीमती प्रतिभा सिंह ने छात्रों की प्रस्तुतियों में अत्यधिक रुचि ली और भविष्य में उनकी बड़ी सफलता की कामना की। इस अवसर पर श्री गुर सरूप सूद, अध्यक्ष, डी.ई.आई, प्रोफेसर आनंद मोहन, रजिस्ट्रार, डीईआई, श्रीमती स्नेह बिजलानी, कोषाध्यक्ष, डी.ई.आई, प्रोफेसर संगीता कुमार, कार्यक्रम की समन्वयक और विभिन्न प्राचार्य, संकाय डीन, विभागों के प्रमुख और डी.ई.आई के कई अन्य संकाय सदस्य भी उपस्थित थे।

गर्भाशय ग्रीवा कैंसर और किशोर स्वास्थ्य पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

डी.ई.आई के एकीकृत चिकित्सा संकाय (आयुष) होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, दयालबाग़, आगरा और सरन आश्रम अस्पताल, दयालबाग़, आगरा द्वारा 27 जुलाई, 2024 को डी.ई.आई. के स्कूल ऑफ एजुकेशन ऑडिटोरियम में 'गर्भाशय ग्रीवा कैंसर

और किशोर स्वास्थ्य' पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. गुर देवी श्रीवास्तव ने महिलाओं में गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के बढ़ते मामलों के प्रति जागरूकता की आवश्यकता पर विचार–विमर्श किया। उन्होंने जीवन के बाद के वर्षों में गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर से लड़ने के लिए एचपीवी टीकाकरण की उपलब्धता को एक हालिया निवारक उपाय बताया। होम्योपैथिक रैपरटोरी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. स्वाति मिश्रा, डी.ई.आई एकीकृत चिकित्सा संकाय (आयुष) होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल, दयालबाग़, आगरा ने 'गर्भाशय ग्रीवा कैंसर और इसके होम्योपैथिक उपचार' पर एक व्याख्यान दिया और डी.ई.आई आयुष संकाय की रेज़िडेंट मेडिकल ऑफिसर डॉ. देवर्षु सुधा सरस्वती ने 'किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम' पर एक परस्पर संवादात्मक सत्र आयोजित किया, जहां उन्होंने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक जीवन शैली के लाभों पर चर्चा की। डी.ई.आई आयुष संकाय की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. दीप्ति शर्मा और विभाग के अन्य सदस्यों ने कार्यक्रम के आयोजन में सहयोग किया। डी.ईआई के सभी संकायों की महिला शिक्षिकाओं और छात्राओं ने इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया और टीकाकरण अभियान के लिए पंजीकरण कराया।

संकाय समाचार

कला संकायः

शिक्षकोपलब्धि –

- डॉ. निशीथ गौड़, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग को डॉ. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय में 28 मई से 4 जून, 2024 तक आयोजित विशेष सात दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर 'सप्तदिवसात्मकं संस्कृत सम्भाषणशिविरम' में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

- संगीत विभाग की अध्यक्ष प्रो. लवली शर्मा को वृंदावन के प्रसिद्ध राधा रमण मंदिर में राग सेवा करने का पावन अवसर प्राप्त हुआ, जिसके अंतर्गत उन्होंने 15 जून, 2024 को 'राग तोड़ी' में 'निबद्ध एकताल' और 'रूपक ताल में ध्रुपद' वादन किया। 28 जुलाई, 2024 को वृंदावन के प्रसिद्ध रंगनाथ मंदिर के प्रांगण में आयोजित अपने दूसरे कार्यक्रम में प्रो. शर्मा ने 'मिस्र शिवरंजनी राग' बजाकर कार्यक्रम की शुरुआत की और फिर 'मियां मल्हार' पर 'सावन की कजरी' के साथ सितार बजाकर कार्यक्रम का समापन किया। इस अवसर पर उनके साथ उनके विभाग के दो अन्य संकाय सदस्य डॉ. शिव शंभू कपूर, जिन्होंने तबला वादन किया, तथा डॉ. दरश अधारी, जिन्होंने मधुर भजन प्रस्तुत किए, भी उपस्थित थे।

छात्रोपलब्धिः

हिंदी विभाग की शोधार्थी डॉ. सदफ इश्तियाक द्वारा प्रो शर्मिला सक्सेना के निर्देशन में किए गए पी एच डी शोध कार्य ''प्रवासी महिला कथाओं का कथा साहित्यः संवेदना एवं शिल्पः अमेरिका के विशेष संदर्भ में'' को भारतीय विश्वविद्यालय संगठन द्वारा हिंदी साहित्य के क्षेत्र में किए गए सर्वश्रेष्ठ शोध कार्यों की सूची में दूसरा स्थान दिया गया है।

शिक्षा संकाय

शिक्षकोपलब्धिः

- स्कूल ऑफ एजुकेशन, डी.ई.आई की समन्वयक डॉ. सोना दीक्षित ने 'New Educational Policy Conference on Transformative Educational Actions on Multi-Disciplinary System 2024' के लिए आमंत्रित वक्ता और पैनलिस्ट के रूप में कार्य किया और 5 और 6 जुलाई, 2024 को चेन्नई के सविता स्कूल ऑफ लॉ, सविता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एंड टेक्निकल साइंसेज (एस आई एम ए टी एस) में आयोजित 'एन ई पी 2020: Towards Transformative, Innovative and Sustainable Pedagogies' शीर्षक से एक व्याख्यान दिया।
- शिक्षा संकाय, डी.ई.आई की सहायक प्रोफेसर डॉ. नेहा जैन ने 5 अगस्त, 2024 को सामुदायिक रेडियो स्टेशन, आगरा में 'शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता' विषय पर एक व्याख्यान दिया।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

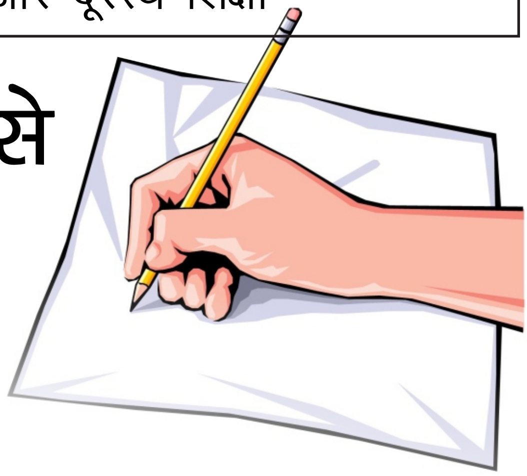

यह समझाने के लिए कि भारत में बड़े पैमाने पर नोबेल पुरस्कार विजेताओं का Production क्यों नहीं हो रहा है, नोबेल पुरस्कार फाउंडेशन के कार्यकारी निदेशक लार्स हेइकेनस्टेन ने निम्नलिखित कारण बताए [1]: ''पिछले 100 वर्षों में विज्ञान ने उच्च स्तर के आर्थिक विकास से संबंधित बहुत प्रगति की है। मुझे लगता है कि भारतीय मामले में स्पष्टीकरण सरल है कि आप के पास अत्यधिक विकसित विज्ञान प्रणाली नहीं है और न ही आर्थिक संसाधन। यही एक कारण है कि भारतीय मूल के कई लोग दूसरे देशों में चले गए और जब वे दूसरे देशों के साथ काम कर रहे थे, तब उन्हें यह पुरस्कार मिला है।

इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज़ की अध्यक्ष मार्सिया मैकनट द्वारा जून 2024 के अंत में कथित तौर पर दिए गए पहले "स्टेट ऑफ द साइंस" संबोधन [2], को पढ़ना थोड़ा आश्चर्यजनक था, जिसमें चेतावनी दी गई थी कि अमेरिका, जो विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेताओं को पैदा करने में सबसे आगे रहा है, अपने वैश्विक वैज्ञानिक नेतृत्व को अन्य देशों को सौंप रहा है – विशेष रूप से चीन पर प्रकाश डालते हुए। उन्होंने कहा कि अमेरिका अभी भी अनुसंधान और विकास पर किसी भी अन्य देश की तुलना में सबसे अधिक पैसा खर्च करता है, लेकिन चीन जल्द ही उन निवेशों से आगे निकल जाएगा – उदाहरण के लिए, अमेरिका में सबसे अधिक उद्धृत विज्ञान पत्रों की हिस्सेदारी घट रही है।

ऐसा माना जाता है कि अमेरिकी विज्ञान वैश्विक STEM (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) नेतृत्व की दौड़ में हार रहा है। मैकनट ने तर्क दिया कि विज्ञान में एक देश की ताकत उसकी रक्षा क्षमताओं के साथ–साथ विदेशों में अपने मूल्यों को फैलाने की क्षमता को भी आकार देती है, इसके अलावा, यह फिसलन अमेरिका के लिए अपनी अर्थव्यवस्था की ताकत को बनाए रखना मुश्किल बना सकती है। उन्होंने गिरावट को उलटने के लिए एक अंतिम कार्य योजना भी बनाई। उन्होंने सुझाव दिया कि देश का नवाचार करने और आगे रहने में उसकी विफलता उसके इतिहास के विपरीत है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दशकों में, अमेरिका ने बुनियादी और अनुप्रयुक्त अनुसंधान दोनों में भारी निवेश करके और विदेशी प्रतिभाओं को आमंत्रित करके विज्ञान में व्यापक उत्कृष्टता हासिल की। इस अवधि के दौरान राष्ट्रीय विज्ञान फाउंडेशन और नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (NASA) जैसे ऐतिहासिक संस्थान उभरे।

1980 के दशक में संघीय निवेश में कमी आई और वैज्ञानिक परिदृश्य अधिक जटिल और समन्वय करने में कठिन हो गया, क्योंकि अनुसंधान और विकास का अधिकांश हिस्सा निजी कंपनियों द्वारा संचालित किया जा रहा था, जो संकीर्ण, व्यावहारिक हितों का पीछा करती थीं और अपने निष्कर्षों को अपने तक ही सीमित रखती थीं। मैकनट ने समझाया कि जब कंपनियाँ पूरे क्षेत्र पर कब्जा कर लेती हैं, जैसा कि वे वर्तमान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के साथ कर रही हैं, तो अनुसंधान कभी–कभी इस तरह से आगे बढ़ता है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रति जनता का अविश्वास बढ़ता है।

मैकनट ने इस बात पर जोर दिया कि इन परिस्थितियों में, K12 STEM शिक्षा (यानी किंडरगार्टन से 12वीं कक्षा के बीच सभी छात्रों को दी जाने वाली आधारभूत शिक्षा) में सुधार करना सबसे महत्वपूर्ण है। अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार, अमेरिकी छात्र विज्ञान में मध्यम श्रेणी में प्रदर्शन करते हैं और वे गणित में औसत से नीचे हैं। अमेरिका के STEM कौशल का देश के 19% कार्यबल और STEM Ph.D. जनसंख्या के 43% के लिए योगदान है। मैकनट ने कहा कि यह चिंता का विषय है, क्योंकि जैसे–जैसे अन्य देश रैंक में आगे बढ़ेंगे, अमेरिका को प्रतिभा के लिए उनके साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी।

मैकनट की सिफारिशों को K12 शिक्षा का विस्तार करने वाले कानून के जरिए लागू किया गया। उन्होंने यह भी कहा कि बड़ी कक्षाओं में छात्रों को विज्ञान को खोज की प्रक्रिया के बजाय तथ्यों के संग्रह के रूप में देखना सिखाया जाता है।

18 अगस्त, 2024 के टाइम्स ऑफ इंडिया में चीन में विज्ञान शिक्षा में कुछ उत्कृष्ट उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है, जिसका शीर्षक है 'रसायन विज्ञान की कक्षाएं, अनुसंधान प्रयोगशालाएँ चीन की तकनीकी क्षमता का निर्माण करती हैं'। इनमें से कुछ नीचे दिए गए हैं:

- चीन के शोधकर्ता 64 महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों में से 52 में व्यापक रूप से उद्धृत शोधपत्र प्रकाशित करने में दुनिया में अग्रणी हैं
- चीन में यू जी के ज्यादातर छात्र गणित, विज्ञान, इंजीनियरिंग या कृषि में पढ़ाई करते हैं और चीन के तीन चौथाई डॉक्टरेट छात्र भी यही करते हैं। तुलनात्मक रूप से, अमेरिका के सिर्फ 20% यूजी छात्र और आधे डॉक्टरेट छात्र ही इन श्रेणियों में आते हैं।
- चीन की अर्थव्यवस्था में विनिर्माण (Manufacturing) का योगदान 28% है, जबकि अमेरिका में यह 11 % है।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

संदर्भ:

[1] P.K. Bagchi, University News, January 30 – February 05, 2017
[2] S.S. Iqbal, Scientific American, August 7, 2024

रहस्यपूर्ण पीनियल ग्रंथि

डॉ. अशोक सहाय, Honorary प्रोफेसर, एकीकृत चिकित्सा संकाय (आयुष),
डी.ई.आई, डीम्ड यूनिवर्सिटी, दयालबाग, आगरा –282 005 यू पी (भारत)

मानव शरीर में असंख्य अंतःस्रावी ग्रंथियाँ होती हैं, पीनियल ग्रंथि, हाइपोथैलेमस, पिट्यूटरी, थायरॉयड, आदि। उपलब्ध जानकारी के अनुसार पीनियल ग्रंथि मध्य रेखा में नाक की जड़ से लगभग 10 से 12 सेमी पीछे स्थित (चित्र 1) [1] है।

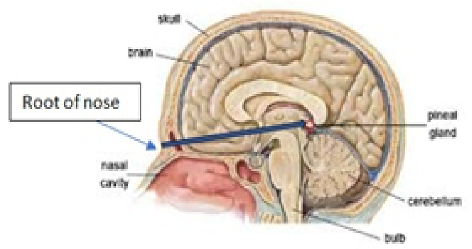

Fig. 1: Pineal gland in human brain.

।पीनियल ग्रंथि का विकास लगभग 50 करोड़ वर्ष पूर्व हुआ था। अब पीनियल एकमात्र अंतःस्रावी ग्रंथि है जो प्रकाश के प्रति संवेदनशील है। यह अंधेरे में उत्तेजित होती है और प्रकाश में दबा दी जाती है। प्रकाश संकेत ग्रंथि तक आंख के 5–न्यूरॉन कैस्केड के माध्यम से पहुँचते हैं। ग्रंथि एक हारमोन्स समूह स्रावित करती है अर्थात् (i) Indolamines, (ii) Peptide group of hormones, (iii) Pinoline and (iv) Dimethyltryptamine (DMT)। Melatonin और Dimethyltryptamine प्रमुख हैं।

1958 में खोजी गई पीनियल ग्रंथि द्वारा संश्लेषित और स्रावित **मेलाटोनिन** ने वैज्ञानिकों और चिकित्सकों का ध्यान आकर्षित किया। सूरज ढलते ही इस हार्मोन का स्तर बढ़ जाता है और मस्तिष्क इसे रात के रूप में पहचान लेता है, जिससे नींद आती है। सुबह होते ही, जैसे ही सूरज की किरणें आँखों पर पड़ती हैं, मेलाटोनिन का स्तर गिर जाता है और व्यक्ति जाग जाता है। यह इस हार्मोन के कारण है कि पीनियल ग्रंथि Circadian Rhythm (जैविक घड़ी) को नियंत्रित करती है, और नींद–जागने के चक्र को नियंत्रित करती है।

जैट–लैग और नींद संबंधी विकारों को ठीक करने के लिए क्लिनिकल प्रैक्टिस में मेलाटोनिन हार्मोन का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है। चूंकि छोटे बच्चे स्वाभाविक रूप से रात में जागते रहते हैं, जिससे अक्सर माँ को असुविधा होती है, रात में आखिरी बार दूध पिलाने के बाद बच्चे को मेलाटोनिन की बूंदें देने से बच्चा सो जाता है और माँ को बहुत राहत मिलती है। कोविड–19 महामारी के दौरान, इस हार्मोन का व्यापक रूप से सूजन वाले फेफड़ों की रक्षा करने, रक्त के थक्के (clots) को रोकने के लिए उपयोग किया गया था और इसने अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता को कम किया।

पीनियल ग्रंथि द्वारा स्रावित दूसरा महत्वपूर्ण हार्मोन DMT या स्पिरिट अणु है। यह हार्मोन ध्यान, प्रसव और मृत्यु के समय पीनियल ग्रंथि में उच्च सांद्रता (concentration) में पाया जाता है।

मस्तिष्क की रेत पीनियल ग्रंथि का एक और दिलचस्प घटक है। रेत पीनियल ग्रंथि में कैल्शियम जमा होने से बनती है। कुल

मिलाकर, वे पीनियल ग्रंथि के कार्यों को दबा देते हैं। तीन प्रकार के जमावों (deposits) में से, **कैल्साइट माइक्रो–क्रिस्टल** हैं जिन्हें पहली बार बेकोनियर [2] ने मानव पीनियल ग्रंथि में रिपोर्ट किया था। वे hexagonal hydroxyapatite क्रिस्टल हैं जो पीनियल ग्रंथि के नरम ऊतकों (tissues) में स्वतंत्र रूप से तैरते हैं। *वे ध्वनि कंपन को विद्युत संकेतों में परिवर्तित करते हैं।* गॉटफ्रीड डी पुरुकर [3] ने बताया कि जब भी हमें कोई अंदेशा होता है तो पीनियल ग्रंथि धीरे से कंपन करती है या जब हमें अंतरज्ञान या प्रेरणा या सहज ज्ञान की अचानक चमक होती है तो यह दृढ़ता से कंपन करती है।

आश्चर्यजनक रूप से, इन क्रिस्टल के कारण, पीनियल ग्रंथि बिजली (Piezoelectricity) उत्पन्न करती है। एक बहुकेंद्रित अध्ययन में, लैंग और उनके साथियों। [4] ने पीनियल ग्रंथि में Piezoelectricity क्रिस्टल की उपस्थिति का प्रदर्शन किया। पीनियल ग्रंथि में भी Piezoluminescence है। यह ठंडी नीली और हरी रोशनी उत्सर्जित करती है।

दूरसंचार टावर अन्य टावरों से जुड़ने और संचार को सफल बनाने के लिए विद्युत चुम्बकीय विकिरण उत्सर्जित करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, ये विकिरण लंबे समय तक संपर्क में रहने पर व्यक्ति के स्वास्थ्य, वन्य जीवन और वनस्पति को नुकसान पहुंचाते हैं। इन टावरों से निकलने वाले विकिरण कुछ जानवरों की प्रजातियों जैसे पक्षियों और कीड़ों में पीनियल ग्रंथि के कार्य, व्यवहार, नेविगेशन और संचार में बाधा डालते हैं। मोबाइल टावर की विकिरण किरण से कम से कम 25 फीट की सुरक्षित दूरी बनाए रखने की सलाह दी जाती है। कम ऊंचाई पर उड़ने वाले पक्षी इन टावरों के सामने से नहीं गुजरते, बल्कि वे ऐसे टावरों के पीछे या ऊपर से उड़ते हैं। संभवतः शक्तिशाली विद्युत चुम्बकीय विकिरण शहरी क्षेत्रों से गौरैया (sparrow) के गायब होने के लिए जिम्मेदार हैं।

दूसरी शताब्दी में यूनानी चिकित्सक गैलेन द्वारा पीनियल ग्रंथि की खोज के बाद से आज तक इसे ध्यान, अंतरज्ञान (intuition) और अलौकिक और रहस्यमय शक्तियों का अंग माना जाता है। तीसरी धार्मिक साहित्य में , इस ग्रंथि को मनुष्य के माथे में स्थित तीसरी आँख या छठे चक्र के रूप में जाना जाता है।

अंत में, मैं परम श्रद्धेय प्रोफेसर प्रेम सरन सतसंगी, रा–धा–स्व–आ–मी मत के आध्यात्मिक लीडर, दयालबाग, आगरा और अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति (एक non-statutory निकाय जो DEI के लिए थिंक–टैंक के रूप में कार्य करता है) का उल्लेख करते हुए अपनी बात समाप्त करूंगा, जिन्होंने सत्संग के दौरान अपने एक प्रवचन में यह टिप्पणी करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की थी कि **''पीनियल ग्रंथि आत्मा का स्थान नहीं है''**।

संदर्भः

[1] **Singh Vishram** (2023). Diencephalon andThird Ventricle, Chapter 26, Text Book of Anatomy, Head, Neck and Brain, 4th ed. RELX India Pvt. Ltd. (formerly Elsevier India Pvt. Ltd.), New Delhi, 4th edition, pp. 379-380.

[2] **Beconier S, Lang S, Polomska M. et. al.** (2002) Calcite microcrystals in the pineal gland of the human brain: First physical and chemical studies. Bioelectromagnetics, 23 (7): 488- 495.

[3] **de Purucker G**. Man in Evolution, Chapter 16 e The Pineal and Pituitary Glands. Theosophical University Press; 2011:208.

[4] **Lang, S.B., Marino, A.A., Berkovic, G., Fowler, M., Abreo, K. D.** (1996) Piezoelectricity in the human pineal gland. Bioelectrochem. Bioenerg. 41, 191–195.

केन्द्रों से समाचार

मुरार सेंटर में ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित

4 अगस्त, 2024 को डी.ई.आई सूचना केंद्र, मुरार में एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभी शिक्षक, छात्र और उनके अभिभावक शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ हुई। केंद्र प्रभारी ने केंद्र में चल रहे पाठ्यक्रमों के बारे में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की और डी.ई.आई की शैक्षिक नीति पर प्रकाश डाला। श्री प्रेम प्यारा सतसंगी ने संस्थान की शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों के महत्व पर विचार–विमर्श किया। श्री बीरेंद्र सिंह ने अभिभावकों और छात्रों के कर्तव्यों पर प्रकाश डाला। अभिविन्यास सी डी जिसमें संस्थान के इतिहास, मूल्यों, मिशन, नीतियों, अभिनव उपक्रमों, कोर पाठ्यक्रमों और अध्ययन के अन्य कार्यक्रमों के बारे में विवरण शामिल थे, छात्रों और अभिभावकों को भी दिखाया गया। इसके बाद, सभी छात्र मंच पर आए और एक–एक करके अपना परिचय दिया।

78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन डी.ई.आई केंद्रों में किया गया

जमशेदपुर

आगरा सिटी

लुधियाना

78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, डी.ई.आई सेंटर जमशेदपुर के कर्मचारियों और छात्रों ने इसे बड़े उत्साह, देशभक्ति की भावना और अपार खुशी के साथ मनाया। छात्रों ने अभिनव पोस्टर बनाए और हॉल और परिसर को खूबसूरती से सजाया। स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण कार्यक्रम का सीधा प्रसारण डी.ई.आई मुख्य परिसर से प्राप्त हुआ। इसके बाद, स्थानीय समारोह हुआ जिसमें छात्रों ने देशभक्ति के गीत गाकर, देशभक्ति के भाषण देकर और एक नाटक प्रस्तुत करके भाग लिया। संकाय सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए और छात्रों को समाज के जिम्मेदार नागरिक और डी.ई.आई के ब्रांड एंबेसडर बनने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव और उपस्थित लोगों को मिठाई और नाश्ते के वितरण के साथ हुआ। यह सभी के लिए एक यादगार कार्यक्रम था।

15 अगस्त 2024 को डी.ई.आई आगरा सिटी सेंटर में सभी शिक्षकों और छात्रों ने स्वतंत्रता दिवस मनाया। डी.ई.आई में ध्वजारोहण के लाइव प्रसारण के बाद, छात्रों ने बड़े उत्साह और जोश के साथ अंग्रेजी और हिंदी में देशभक्ति के गीत और भाषण प्रस्तुत किए। दो शिक्षकों ने प्रेरक भाषण प्रस्तुत किए और केंद्र प्रभारी ने अपने भाषण में छात्रों को कम समय में सुंदर प्रस्तुतियाँ देने के लिए सराहना की और उन्हें भविष्य के लिए भी प्रोत्साहित किया। समारोह का समापन सभी को अल्पाहार वितरित करने के साथ हुआ। डी.ई.आई सेंटर लुधियाना ने भी देश के 78वें स्वतंत्रता दिवस को देशभक्ति के जोश के साथ मनाया। केंद्र को तिरंगे झंडों और ध्वजों से सजाया गया था और कर्मचारियों के साथ–साथ छात्रों ने डी.ई.आई मुख्य परिसर, दयालबाग़, आगरा से समारोह का सीधा प्रसारण देखा। अंत में मिठाई और स्नैक्स वितरित किए गए।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

15 अगस्त, 2024 की सुबह दयालबाग़ में जब तिरंगा फहराया गया तब हर्ष, उत्सव और देशभक्ति की ध्वनि गूंज उठी, जो हमारे देश की स्वतंत्रता के एक और वर्ष की शुरुआत थी। परमपिता की उपस्थिति और कृपा से धन्य, वहां मौजूद शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति था जो वहां मौजूद होने पर खुद को भाग्यशाली महसूस न करता हो। प्रस्तुतियों का समापन लड़ाकू भूमिकाओं में युवतियों द्वारा मार्शल आर्ट, लाठी, जिमनास्टिक और कमांडो प्रशिक्षण जैसी आत्मरक्षा तकनीकों का प्रदर्शन करने के साथ हुआ। इन युवतियों को प्रदर्शन करते देखना साथ ही अति मानवीय विकास योजना के बच्चों की अनुकरणीय प्रस्तुति को देखकर कोई भी यह सोचने से नहीं बच सकता कि क्या ये 'कल के राजमिस्त्री (mason) नहीं हैं...जिन्हें कोई कठिनाई नहीं डरा सकती, कोई दुर्भाग्य निराश नहीं कर सकता और कोई प्रलोभन उन्हें भटका नहीं सकता।'

डी.ई.आई पर एक अल्मा मेटर के रूप में लेख संस्थान में बिताए गए उन पलों का जश्न मनाता है, जिन्होंने हमारे जीवन को हमेशा के लिए आकार दिया होगा। हम अपने पाठकों को aadeisnewsleter@gmail.com पर अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं और उनसे सुनने के लिए उत्सुक हैं।

मेरा विद्यालयः दयालबाग शैक्षणिक संस्थान

मोहित सतसंगी, पूर्व छात्र, इंजीनियरिंग संकाय, 1999 की कक्षा,
डी.ई.आई वर्तमान में, सीनियर सिस्टम आर्किटेक्ट, ***NXP*** सेमीकंडक्टर

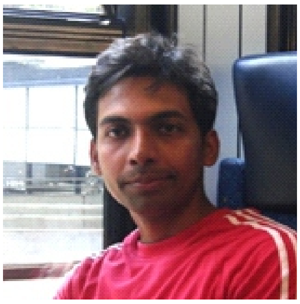

डी.ई.आई – एक ऐसा नाम जो गर्व, उद्देश्य की भावना और ढेर सारी यादों से जुड़ा है। मुझे 1995 की गर्मियों का वह दिन अच्छी तरह याद है जब मैंने चयन सूची देखी थी। इससे मुझे और मेरे परिवार को बहुत खुशी मिली! मुझे इस बात का अहसास ही नहीं था कि मैं क्या करूँगा। कि DEI मेरे जीवन की कक्षा का एक अभिन्न अंग बन जाएगा, जो मेरे सफर को गहन तरीके से आकार देगा।

मैं अपनी स्नातक की पढ़ाई के 25 साल पूरे होने का जश्न मना रहा हूँ, मैं खुद को उन प्रारंभिक वर्षों के बारे में सोचता हुआ पाता हूँ। रोजमर्रा की कठिनाइयाँ – निरंतर मूल्यांकन, जी.डी., सेमिनार, प्रयोगशालाएँ, कार्यशालाएँ आदि – हमें परिसर के दरवाजों के परे उन चुनौतियों के लिए तैयार करने की प्रक्रिया में थीं जिनका हमें सामना करना था। डी.ई.आई ने सिर्फ अकादमिक कठोरता से कहीं ज्यादा की पेशकश की। जहाँ इसने कई सामाजिक सेवा घटकों और कृषि संचालन कक्षाओं के माध्यम से श्रम की गरिमा को स्थापित किया, वहीं सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों ने एक समग्र व्यक्तित्व के लिए इनपुट प्रदान किए। हमारे शिक्षकों की विनम्रता, सीखने के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और युवा दिमागों को पोषित करने की सच्ची इच्छा डी.ई.आई के दूरदर्शी मिशन के प्रमाण थे। यह एक अच्छी तरह से तैयार मशीनरी है जो इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए कल के नागरिकों को तैयार करने के लिए काम कर रही है।

मैं अक्सर सोचता हूँ कि डी.ई.आई के पूर्व छात्र क्या खास बनाते हैं? मेरे हिसाब से, यह उन विशेषताओं का मिश्रण है, जिन्हें परिभाषित करना आसान नहीं है। फिर भी पहले से प्रचलित शब्द 'दयालबाग़ उत्पाद' इसे अच्छी तरह से दर्शाता है। यह शब्द और आगे जाने की दृढ़ इच्छा प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की दृढ़ता और दूसरों की मदद करने की सच्ची इच्छा दर्शाता है। DEI में बिताए गए समय के दौरान हमारे अंदर जो गुण विकसित हुए, वे लंबे समय तक हमारे जीवन को आकार देते रहे।

मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से, डी.ई.आई से सबसे महत्वपूर्ण सीख सिस्टम दृष्टिकोण थी। यह दृष्टिकोण सामाजिक और पर्यावरणीय प्रणालियों को औपचारिक रूप से डी.ई.आई में शिक्षा एकीकृत करता प्रतीत होता है। कोई पूछ सकता है कि सिस्टम दृष्टिकोण वास्तव में क्या है। विकिपीडिया के सौजन्य से एक त्वरित खोज, इसे इंजीनियरिंग और प्रबंधन के एक अंतःविषय क्षेत्र के रूप में वर्णित करती है, जो उनके जीवन चक्रों में जटिल प्राणियों को डिज़ाइन करने, एकीकृत करने और प्रबंधित करने पर केंद्रित है। कोर, सिस्टम थिंकिंग निहित है – घटकों और उनके सामूहिक कार्य के परस्पर संबंध को देखने की क्षमता है। जैसा कि किस्मत में था, मैं अब सिस्टम इंजीनियरिंग डोमेन में काम करता हूं, एक ऐसा प्रक्षेपवक्र जिसे डी.ई.आई ने बहुत पहले गति दी थी। समग्र और अंतःविषय दृष्टिकोण मैंने DEI में देखा कि उसने मेरे काम को बहुत प्रभावित किया। ऑटोमोटिव सिस्टम के लिए प्रोसेसर बनाते समय, मार्केटिंग से लेकर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट तक की विविध टीमों के साथ सहयोग करते हुए – मैं खुद को सिस्टम थिंकिंग के सिद्धांतों को स्वाभाविक रूप से लागू करते हुए पाता हूँ। हमारा लक्ष्य? सिस्टम–स्तरीय समाधान बनाना जो विभिन्न उपभोक्ता कार आर्किटेक्चर में आसानी से फिट होने के साथ–साथ ड्राइव भी करें।

पीछे मुड़कर देखें तो, DEI सिर्फ एक शैक्षणिक संस्थान नहीं था; यह एक लॉन्च पैड था जिसने मुझे आजीवन सीखने की कक्षा में पहुँचाया। जैसे–जैसे मैं अपनी यात्रा जारी रखता हूँ, मैं अपने साथ DEI की अदम्य भावना को लेकर चलता हूँ, अनुभवों, सीखों और इसके द्वारा प्रदान किये गए मूल्य के लिए हमेशा अभारी रहूँगा।

स्नातक छात्रों को संत कबीर की कविता पढ़ानाः एक अनूठा अनुभव

गुरप्यारी भटनागर, पी एच. डी, अंग्रेजी साहित्य, एमए अंग्रेजी (बैच 1996), डी.ई.आई.
वर्तमान में, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी साहित्य, शारदा विश्वविद्यालय और फैसिलिटेटर, नोएडा डी.ई.आई.–डी.ई.पी.

मुझे पिछले सेमेस्टर में अंग्रेजी साहित्य के स्नातक छात्रों को संत कबीर की कविता पढ़ाने का अवसर मिला। रा–धा–स्व–आ–मी मत के अनुयायी के रूप में मेरा व्यक्तिगत अनुभव – एक परंपरा जो भक्ति साहित्य में पाए जाने वाले मूल सिद्धांतों के साथ प्रतिध्वनित होती है, ने मुझे बहुत प्रभावित किया। यह यात्रा बहुत खास थी। यह एक ऐसा अनुभव था जो न केवल मेरे छात्रों के लिए बल्कि मेरे लिए भी परिवर्तनकारी साबित हुआ। भक्ति काव्य की खोज ने मेरे छात्रों को गुरु और भक्ति जैसी अवधारणाओं की अपनी समझ का विस्तार करने के लिए एक अनूठा स्थान प्रदान किया ।

जब हमने मॉड्यूल शुरू किया, तो मुझे अपने छात्रों के साथ चर्चा के माध्यम से एहसास हुआ कि भक्ति कविता के बारे में उनके पास पूर्वाग्रह हैं। उनके लिए, भक्ति और गुरु के विचार अक्सर एक संकीर्ण लेंस के माध्यम से देखे जाते थे, जो लोकप्रिय संस्कृति या स्कूल में और विश्वविद्यालय स्तर पर सीमित धार्मिक शिक्षा द्वारा आकार लेते थे। जब हम भक्ति काव्य में तल्लीन हुए, संत कबीर के जीवन और कार्यों पर चर्चा की, तो मैंने यह भी देखा कि इन अवधारणाओं के साथ उनका जुड़ाव कुछ हद तक सही था। वे छंदों की साहित्यिक सराहना में संलग्न होना पसंद करते थे, लेकिन गहन आध्यात्मिकता को समझने के लिए दोहों और कविताओं में निहित सन्देश के लिए संघर्ष करते थे। यह वह समय था जब मुझे लगा कि मेरे छात्रों को अवधारणाओं की मेरी अनुभवात्मक समझ से लाभ मिलना चाहिए। मुझे लगा कि यह महत्वपूर्ण है कि वे अवधारणाओं को न केवल विद्वत्तापूर्ण बल्कि सही आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी देखें।

संत कबीर की कविताओं में गहरे अर्थों को समझने के प्रति मेरे छात्रों की संशयात्मकता से मुझे विशेष रूप से पीड़ा हुई। उदाहरण के लिए, उनमें से अधिकांश के लिए भक्ति की अवधारणा अक्सर खोखले रीति–रिवाजों और कर्मकांडों तक सीमित रह गई थी। इस दृष्टिकोण में गहराई और समृद्धि का अभाव था। भक्ति काव्य में निहित है। कक्षा में सीखने के दौरान हमारी चर्चाओं, विवादों और अन्वेषणों के माध्यम से, मैं उन्हें उनकी सतही समझ और व्याख्याओं से परे मार्गदर्शन करने में सक्षम थी। इस बदलाव ने उन्हें

मॉड्यूल के साथ अधिक सार्थक और गहन तरीके से जुड़ने की अनुमति दी। इसी तरह, संत कबीर की कविताओं के रूपक जैसे 'दुल्हन–दूल्हा', 'प्रियतम' (XX-II-20), 'हंस' (XII-II-24), 'कमल की पंखुड़ियां' (IV-I-58), 'अप्रस्तुत संगीत स्वयं ध्वनित होता है' (XV-II-57) को पारलौकिक अर्थ में देखने की आवश्यकता है। [रवींद्र नाथ टैगोर द्वारा संत कबीर की भक्ति कविता का अनुवाद पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित किया गया था। पत्र में संदर्भ टैगोर के पाठ, कबीर की एक सौ कविताएँ से लिए गए हैं।] इस अनुभव ने छात्रों को भक्ति काव्य के आध्यात्मिक और दार्शनिक आधारों की अधिक विस्तृत और समावेशी समझ प्रदान करने के लिए कक्षा में अपने व्यक्तिगत अनुभवों और विश्वासों को लाने के महत्व को मजबूत किया। अपने विश्वास के भीतर अवधारणाओं की अपनी थोड़ी सी समझ को साझा करके, मैं अपने छात्रों को कबीर साहब की कविता को देखने का एक नया नजरिया प्रदान करने में सक्षम थी। मेरा मानना है कि DEI के पूर्व छात्र और रा–धा–स्व–आ–मी मत के अनुयायी होने के सौभाग्य के साथ एक शिक्षण प्रशिक्षण के रूप में, हम एक ऐसा शिक्षण वातावरण बना सकते हैं जो न केवल शिक्षाप्रद बल्कि गहरा परिवर्तनकारी भी हो। जब मैं पिछले सेमेस्टर पर विचार करती हूँ, तो मैं कृतज्ञता की भावना से भर जाती हूँ। अपनी समझ और अनुभव के माध्यम से भक्ति काव्य पढ़ाने से मुझे अपने छात्रों के साथ एक ऐसे तरीके से जुड़ने का मौका मिला जिसने सार्थक और जीवन जीने के नए तरीके के लिए दिमाग खोल दिया।

परम विजय

प्रिया सिंह
एम बी एम (बैच 1993), धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (बैच 2012), डी.ई.आई.
वर्तमान में, केंद्र प्रभारी, डी.ई.आई. चेन्नई सूचना केंद्र

जब भी होता है अन्याय या गलत काम,
परिस्थिति से मुड़कर मत भागो,
अपनी पूरी ताकत से, मजबूती से खड़े रहो,
हार मत मानो, संघर्ष करो,
विश्वास रखिये, सत्य की जीत होगी।
कलयुग में अत्याचार की अधिकता चारों ओर,
युद्ध, महामारी, अकाल, मृत्यु, हर जगह घनघोर,
निरर्थक लड़ाइयों में मासूम जानें चली गई,
अत्यंत आवश्यकता है, शांति स्थापित करने की ,
विश्वास रखिये, सत्य की जीत होगी।
जब महिलाओं को अपमानित, नीचा दिखाया जाए,
जब बच्चों से दुर्व्यवहार व गंभीर रूप से प्रभावित किया जाए,
मुख मत मोड़ना, दृढ़ता व मजबूती से खड़े रहना,
कमजोर, दबे हुए को हर अन्याय से बचाना,
विश्वास रखिये, सत्य की जीत होगी
जब देखते हैं आप घृणा या भेदभाव,
पीछे मत हटिये, दृढ़ संकल्प से खड़े रहिये,
सब पर प्रेम और करुणा बरसाते रहिये,
एकता और भाईचारे की रीति को वापस ले आइये
विश्वास रखिये, प्रेम की जीत होगी।
ईश्वर का पितृत्व, मनुष्य का भाईचारा,
इस मंत्र को हर देश में फैलाएं,
तब सर्वत्र प्रेम, शांति व्याप्त होगी,
मनुष्य एक दूसरे की परवाह कर पाएं,
विश्वास रखिये, अंततः शांति की जीत होगी।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई.

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन

मुख्य संपादक

प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक

डॉ. सोना दीक्षित

डॉ. सोनल सिंह

डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी

डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य

डॉ. चारु स्वामी

डॉ. नेहा जैन

डॉ. सौम्या सिन्हा

श्री आर.आर. सिंह

प्रो. प्रवीण सक्सेना

प्रो. वी. स्वामी दास

डॉ. रोहित राजवंशी

डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान

अनुवादक

डॉ. नमस्या

डॉ. निशीथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई.
(डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन

प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार

प्रो. एस.के. चौहान

प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल

डॉ. सोनल सिंह

डॉ. मीना पायदा

डॉ. लॉलीन मल्होत्रा,

डॉ. बानी दयाल धीर

श्री राकेश मेहता

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni
(AADEIs & AAFDEI)

संपादक

प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति

डॉ. सरन कुमार सतसंगी,

प्रो. साहब दास

डॉ.बानी दयाल धीर

श्रीमती शिफाली सत्संगी

श्रीमती अरुणा शर्मा

डॉ.स्वामी प्यारी कौड़ा

डॉ. गुरप्यारी भटनागर

डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक

डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालय:
पहली मंजिल, 63,
नेहरू नगर,
आगरा –282002

पंजीकृत कार्यालय:
108, साउथ एक्स प्लाजा –1,
साउथ एक्सटेंशन पार्क II,
नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशन: दयालबाग़ प्रेस